आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 2/जून 2026

Received: 23/05/2026; Accepted: 02/6/2026; Published: 28/06/2026

राग दरबारी : भारतीय लोकतंत्र पर एक तीखा व्यंग्य

डॉ. सुप्रिया सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग

सेंट क्लारेट कॉलेज ,बंगलौर

मो. न.- 9886184007

ईमेल -supriya@claretcollege.edu.in

डॉ. सुप्रिया सिंह, राग दरबारी : भारतीय लोकतंत्र पर एक तीखा व्यंग्य, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 2/जून 2026**,(252 -258)

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

https://doi.org/10.5281/zenodo.21442377

सार

श्रीलाल शुक्ल का राग दरबारी हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण व्यंग्यात्मक उपन्यास है, जो स्वतंत्रोत्तर भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था की वास्तविकताओं को उजागर करता है। यह उपन्यास शिवपालगंज नामक एक काल्पनिक गाँव के माध्यम से भारतीय राजनीति, शिक्षा, प्रशासन, न्याय व्यवस्था और सामाजिक जीवन की विसंगतियों को सामने लाता है। लेखक ने व्यंग्य और यथार्थ के समन्वय द्वारा यह दिखाया है कि लोकतंत्र के आदर्श व्यवहार में किस प्रकार भ्रष्टाचार, स्वार्थ, अवसरवाद और सत्ता-संघर्ष में बदल गए हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में उपन्यास के माध्यम से भारतीय लोकतंत्र की आलोचना का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द : राग दरबारी, श्रीलाल शुक्ल, लोकतंत्र, व्यंग्य, राजनीति, भ्रष्टाचार

भूमिका

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने लोकतंत्र को शासन प्रणाली के रूप में अपनाया। लोकतंत्र से अपेक्षा की गई थी कि वह समानता, न्याय, स्वतंत्रता और जनकल्याण के आदर्शों को स्थापित करेगा। किंतु समय के साथ लोकतांत्रिक संस्थाओं में भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, राजनीतिक अवसरवाद तथा नैतिक पतन जैसी समस्याएँ उत्पन्न होने लगीं। इन परिस्थितियों ने लोकतंत्र की मूल भावना को कमजोर किया।

श्रीलाल शुक्ल ने 1968 में प्रकाशित अपने प्रसिद्ध उपन्यास राग दरबारी में इन्हीं समस्याओं को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। उपन्यास का केंद्र शिवपालगंज नामक गाँव है, जहाँ पंचायत, विद्यालय, सहकारी समिति, पुलिस और न्यायालय जैसी संस्थाएँ लोकतंत्र के आदर्श स्वरूप का प्रतिनिधित्व करने के बजाय सत्ता और स्वार्थ के उपकरण बन चुकी हैं। लेखक ने ग्रामीण जीवन के माध्यम से पूरे भारतीय लोकतंत्र की विडंबनाओं को अभिव्यक्ति दी है।

राग दरबारी में लोकतंत्र का स्वरूप

लोकतंत्र का मूल उद्देश्य जनता की भागीदारी तथा जनहित की रक्षा करना है। राग दरबारी में लोकतंत्र का स्वरूप इसके विपरीत दिखाई देता है। उपन्यास में सत्ता कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के हाथों में केंद्रित है। शिवपालगंज में वैद्यजी सबसे प्रभावशाली व्यक्ति हैं। वे प्रत्यक्ष रूप से किसी बड़े सरकारी पद पर नहीं हैं फिर भी शिवपालगंज की लगभग सभी संस्थाओं पर उनका नियंत्रण है। वे सहकारी समिति, कॉलेज और पंचायत जैसे संस्थानों पर अप्रत्यक्ष नियंत्रण रखते हैं। पंचायत, कॉलेज, सहकारी समिति और स्थानीय राजनीति सब उनके प्रभाव क्षेत्र में हैं। वे स्वयं कम बोलते हैं, लेकिन निर्णय उनके अनुसार ही लिए जाते हैं।

यहाँ लोकतंत्र केवल नाम मात्र का रह गया है। जनता की भूमिका केवल चुनाव के समय तक सीमित है, जबकि निर्णय लेने का अधिकार सत्ता-समूह के पास है। यह स्थिति लोकतंत्र की वास्तविक विफलता को उजागर करती है। इन समस्त स्थितियों को निम्नलिखित बिंदुओं में देखा जा सकता है।

पंचायत व्यवस्था और चुनाव की विडंबना

भारतीय लोकतंत्र की जड़ें पंचायत व्यवस्था में मानी जाती हैं। राग दरबारी में पंचायत चुनाव का चित्रण लोकतांत्रिक प्रक्रिया की वास्तविकता को उजागर करता है।

वैद्यजी सनीचर को प्रधान पद का उम्मीदवार बनाते हैं। सनीचर स्वयं स्वीकार करता है कि वह केवल नाम का प्रधान होगा, वास्तविक शक्ति वैद्यजी के हाथ में ही रहेगी।

"अरे भाई, हम तो नाम भर के प्रधान होंगे। असली प्रधान तो तुम वैद महाराज को समझो। बस यही जानकर चलो कि तुम अपना वोट वैद जी को दे रहे हो।"[1]

इससे स्पष्ट होता है कि चुनाव जनता के प्रतिनिधि चुनने का माध्यम न होकर सत्ता बनाए रखने का साधन बन गया है।

उपन्यास में "रामनगरवाली", "नेवादावाली" और "महिपालपुरवाली" चुनावी तरकीबों का वर्णन अत्यंत व्यंग्यपूर्ण ढंग से किया गया है। विशेष रूप से "महिपालपुरवाली तरकीब" में चुनाव अधिकारी समय से पहले मतदान समाप्त कर परिणाम घोषित कर देता है। यह प्रसंग लोकतांत्रिक चुनावों की निष्पक्षता पर तीखा व्यंग्य है।

लेखक यह संकेत करते हैं कि चुनाव प्रक्रिया में नैतिकता और जनहित का स्थान धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है तथा राजनीतिक लाभ ही सर्वोपरि बन गया है।

शिक्षा व्यवस्था पर व्यंग्य

उपन्यास में छंगामल इंटर कॉलेज शिक्षा व्यवस्था की दुर्दशा का प्रतीक है। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का बौद्धिक विकास होता है, किंतु कॉलेज में शिक्षा के स्थान पर राजनीति और गुटबंदी का बोलबाला है। मास्टर मोतीराम विज्ञान पढ़ाने के बजाय अपनी आटा चक्की की चिंता करते रहते हैं। कक्षा छोड़कर उनका चक्की देखने चले जाना शिक्षा के प्रति उदासीनता का प्रतीक है।

दूसरी ओर प्रिंसिपल और खन्ना मास्टर के बीच चलने वाला संघर्ष कॉलेज को राजनीतिक अखाड़े में बदल देता है। कॉलेज में शिक्षण कार्य की अपेक्षा पद, प्रतिष्ठा और सत्ता के लिए संघर्ष अधिक महत्वपूर्ण दिखाई देता है। प्रिंसिपल, वैद्यजी की कृपा से अपना पद बनाए रखना चाहते हैं जबकि खन्ना मास्टर उप-प्रधानाचार्य बनने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। प्रिंसिपल रुप्पन से कहते हैं -"देख लिया तुमने ? खन्ना रामाधीन का खूंटा पकड़ कर बैठे हैं। वाइस प्रिंसिपली का शौक चर्राया है।"[2]

इस प्रकार राग दरबारी में छंगामल इंटर कॉलेज केवल एक शैक्षणिक संस्था नहीं बल्कि राजनीति का केंद्र है। यहाँ विद्यार्थियों की पढ़ाई से अधिक चर्चा प्रिंसिपल, खन्ना मास्टर, मालवीय और वैद्यजी के गुटों की होती है। जहाँ वैद्यजी और प्रिंसिपल का गुट कॉलेज के प्रशासन और प्रबंधन पर नियंत्रण बनाए रखना चाहता है। वहीँ खन्ना मास्टर और मालवीय का गुट प्रिंसिपल और प्रबंधन की नीतियों का विरोध करता है तथा कॉलेज में अधिक अधिकार चाहता है। दोनों पक्षों के बीच निरंतर संघर्ष चलता रहता है। वाइस प्रिंसिपल के पद का विवाद, शिक्षकों की शिकायतें, अदालत के मुकदमे, छात्रों द्वारा नारेबाजी तथा जांच की माँग—ये सभी घटनाएँ कॉलेज को राजनीतिक अखाड़े में बदल देती हैं। इस तरह शिक्षा संस्थान लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास के बजाय व्यक्तिगत स्वार्थों का केंद्र बन जाता है।

सहकारी समिति और भ्रष्टाचार

स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण विकास के लिए सहकारी समितियों की स्थापना की गई थी। इनका उद्देश्य किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करना था। किंतु राग दरबारी में सहकारी समिति भ्रष्टाचार का केंद्र बन जाती है। वैद जी अपने संम्भाषण में स्वयं कहते हैं -" कहीं -कहीं गबन को छिपाया जाता है। दोष को

छिपाना न चाहिए, नहीं तो जड़ पकड़ लेता है। हम यही सिद्धांत मानते हैं। जिस सहकारी यूनियन में गबन न निकले उसको संदेह से देखना चाहिए।" [3]

समिति का सुपरवाइजर गेहूँ का गबन करके भाग जाता है। इसके बावजूद दोषियों को बचाने और जिम्मेदारी से बचने के प्रयास किए जाते हैं। बैठक में यह निर्णय लिया जाता है कि गबन का नुकसान सरकार को भरना चाहिए। इस प्रकार कोई भी व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता।

यह प्रसंग सरकारी संस्थाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा जवाबदेही के अभाव को उजागर करता है। लेखक दिखाते हैं कि लोकतांत्रिक संस्थाओं का उद्देश्य जनता की सेवा न होकर व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करना बन गया है।

न्याय व्यवस्था की विडंबना

उपन्यास में न्याय व्यवस्था भी लोकतंत्र की विफलता का उदाहरण बनकर सामने आती है। जोगनाथ के मुकदमे और लंगड़ की नकल प्राप्त करने की समस्या के माध्यम से लेखक न्यायिक प्रक्रिया की जटिलता और भ्रष्टाचार को उजागर करते हैं।

लंगड़ एक साधारण व्यक्ति है जो न्यायालय से निर्णय की नकल प्राप्त करना चाहता है। उसे बार-बार रिश्वत देने के लिए मजबूर किया जाता है। जब वह रिश्वत देने से इंकार करता है, तब उसका काम लटकता रहता है। अंततः उसकी नकल फाड़ दी जाती है और उसे फिर से आवेदन करने की सलाह दी जाती है। यह प्रसंग न्याय व्यवस्था की लालफीताशाही, भ्रष्टाचार और आम आदमी की असहाय स्थिति पर अत्यंत प्रभावशाली व्यंग्य है।

इसी प्रकार जोगनाथ के मुकदमे में झूठी गवाहियाँ, राजनीतिक हस्तक्षेप और पुलिस की मनमानी न्याय व्यवस्था की कमजोरियों को सामने लाती हैं। जोगनाथ शिवपालगंज का एक प्रभावशाली और चालाक व्यक्ति है। गयादीन के घर चोरी होने के बाद पुलिस उस पर संदेह करती है और अंततः उसे गिरफ्तार कर लिया जाता है। उसके घर की तलाशी में कुछ आभूषण मिलने का दावा किया जाता है तथा उसके विरुद्ध मुकदमा चलाया जाता है। किन्तु मुकदमे की पूरी कार्यवाही न्याय की अपेक्षा राजनीति और स्वार्थ का खेल बनकर रह जाती है। अदालत में झूठे गवाह पेश किए जाते हैं। बैद्यनाथ नामक व्यक्ति पुलिस की ओर से गवाही देता है, किंतु जिरह के दौरान स्पष्ट हो जाता है कि वह पेशेवर गवाह है। दूसरी ओर छोटे पहलवान, जो पुलिस के पक्ष में गवाही देने आए थे, अदालत में अपना बयान बदल देते हैं और गयादीन की बेटी बेला का नाम बीच में ले आते हैं। जब बद्री उससे इस विषय पर पूछते हैं तो वह कहता है कि -"कहा क्यों नहीं था, गुरु ! पर कहने को तो बहुत-कुछ कहा था। अदालत की गवाही का मामला। जो मुँह में आया कहते चले गए। कौन सच बोलना था।"[4]

इस प्रकार पूरा मुकदमा सच्चाई और न्याय से भटककर व्यक्तिगत आरोपों और राजनीतिक हितों का साधन बन जाता है।

यह पूरा प्रकरण यह दर्शाता है कि न्याय प्राप्त करना कठिन और महंगा हो गया है। लेखक का संकेत है कि न्याय व्यवस्था आम नागरिक के लिए नहीं बल्कि प्रभावशाली लोगों के हितों की रक्षा के लिए कार्य कर रही है।

पुलिस और प्रशासन की भूमिका

लोकतंत्र में प्रशासन और पुलिस का कार्य कानून व्यवस्था बनाए रखना तथा नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना होता है। किंतु राग दरबारी में पुलिस और प्रशासन दोनों ही भ्रष्ट तथा निष्क्रिय दिखाई देते हैं। उपन्यास की शुरुआत में ही ट्रक चालक, अफसर के चपरासी को रिश्वत देकर समस्या से बच निकलता है।

चपरासी ने कहा, "और कर ही क्या सकते हैं हुजूर ? कहाँ तक चालान कीजियेगा। एकाध गड़बड़ी हो तो चालान भी करें।"

एक सिपाही ने कहा "चार्ज शीट भरते-भरते सुबह हो जायेगी।"

इधर-उधर की बातों के बाद अफसर ने कहा "अच्छा जाओ जी बंटा सिंह, तुम्हें माफ किया।"

ड्राइवर ने खुशागद के साथ कहाँ "ऐसा काम शिरिमानजी ही कर सकते हैं।" [5]

आगे चलकर डाके की फर्जी चिट्ठी, जोगनाथ की गिरफ्तारी तथा विभिन्न मुकदमों में पुलिस का व्यवहार यह सिद्ध करता है कि कानून का उपयोग न्याय के लिए नहीं बल्कि प्रभावशाली व्यक्तियों के हितों की रक्षा के लिए किया जाता है।

पुलिस अधिकारी वैद्यजी के प्रभाव से प्रभावित रहते हैं। प्रशासनिक अधिकारियों का भी मुख्य उद्देश्य अपने पद और सुविधाओं की रक्षा करना है। इस प्रकार प्रशासन जनता की सेवा करने के बजाय सत्ता के साथ समझौता करता दिखाई देता है।

उपन्यास की समकालीन प्रासंगिकता

यद्यपि राग दरबारी का प्रकाशन 1968 में हुआ था, फिर भी इसकी प्रासंगिकता आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है। वर्तमान भारतीय समाज में चुनावी राजनीति, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, शिक्षा संस्थानों का राजनीतिकरण, न्यायिक विलंब तथा परिवारवाद जैसी समस्याएँ निरंतर दिखाई देती हैं। इस दृष्टि से राग दरबारी केवल अपने समय का उपन्यास नहीं है, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की दीर्घकालिक प्रवृत्तियों का दस्तावेज भी है। शिवपालगंज केवल एक गाँव नहीं, बल्कि पूरे भारतीय समाज और उसकी लोकतांत्रिक संस्थाओं का प्रतीक बनकर उभरता है।

उपन्यास में रंगनाथ जब शिवपालगंज पहुँचता है, तब धीरे-धीरे उसे यह अनुभव होता है कि गाँव की लगभग सभी संस्थाएँ कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के हितों की पूर्ति का साधन बन चुकी हैं। सनीचर के प्रधान चुने जाने के बाद रंगनाथ के मन में जो विचार आते हैं, वे लोकतांत्रिक व्यवस्था की वास्तविकता को उजागर

करते हैं - "सनीचर की विजय के दिन उसने बहुत सोच डाला और उस दौरान उसे प्रदेशों की राजधानियों में न जाने कितने वैद्यजी और मंत्रियों एवं मुख्यमंत्रियों की कतार में न जाने कितने सनीचर घुसे हुए दिखाई पड़े।" यह कथन आज भी भारतीय राजनीति में स्वार्थ, सत्ता-संघर्ष, गठजोड़ और शक्ति-प्रदर्शन की प्रवृत्तियों को सटीक रूप से अभिव्यक्त करता है।"[6]

इसी संदर्भ में आलोचक हरदयाल का मत उल्लेखनीय है। उनके अनुसार, "स्वाधीनता प्राप्ति के इक्कीस वर्ष बाद प्रकाशित इस उपन्यास में वैद्यजी जिस प्रकार विभिन्न संस्थाओं में सनीचर जैसे कठपुतलों को बैठाते हैं या अपने पुत्र बद्री पहलवान को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करते हैं, क्या इससे स्वाधीन भारत की राजनीति का भविष्य संकेतित नहीं होता है? आज भारतीय राजनीति में जिस तरह परिवारवाद पनप रहा है या बड़े-बड़े राजनीतिक दलों के एकाधिकारी नेता विभिन्न राजनीतिक पदों पर कठपुतलों को बैठा रहे हैं, उससे तो यही सिद्ध होता है कि श्रीलाल शुक्ल अद्‌भुत भविष्यद्रष्टा थे।"[7]

इस प्रकार स्पष्ट है कि राग दरबारी में चित्रित राजनीतिक, सामाजिक और प्रशासनिक विसंगतियाँ आज भी भारतीय लोकतंत्र में विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं। यही कारण है कि उपन्यास का अंतिम संकेत—कि "सारा मुल्क ही शिवपालगंज बन गया है"—आज भी उतना ही सार्थक और प्रासंगिक प्रतीत होता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राग दरबारी भारतीय लोकतंत्र की विसंगतियों पर लिखा गया एक सशक्त व्यंग्यात्मक उपन्यास है। श्रीलाल शुक्ल ने हास्य, विडंबना और कटाक्ष का प्रयोग करते हुए गंभीर सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत किया है। लेखक सीधे उपदेश नहीं देते बल्कि घटनाओं और पात्रों के माध्यम से व्यवस्था की कमियों को उजागर करते हैं।

श्रीलाल शुक्ल ने शिवपालगंज के माध्यम से यह दिखाया है कि लोकतंत्र के आदर्श किस प्रकार भ्रष्टाचार, स्वार्थ, अवसरवाद और सत्ता-संघर्ष के कारण कमजोर हो जाते हैं। पंचायत, शिक्षा, प्रशासन, न्याय व्यवस्था और सहकारी संस्थाओं का चित्रण लोकतांत्रिक व्यवस्था की वास्तविक स्थिति को उजागर करता है।

वैद्यजी जैसे पात्र लोकतांत्रिक सत्ता की वास्तविक प्रकृति को सामने लाते हैं, जबकि रंगनाथ की दृष्टि पाठक को व्यवस्था की आलोचनात्मक समझ प्रदान करती है। इस प्रकार राग दरबारी केवल एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की गहन सामाजिक-राजनीतिक समीक्षा है। यही कारण है कि यह उपन्यास आज भी उतना ही प्रासंगिक और प्रभावशाली है जितना अपने प्रकाशन के समय था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. शुक्ल, श्रीलाल,(2019), रागदरबारी, राजकमल प्रकाशन, पृ 200

2. शुक्ल, श्रीलाल,(2019), रागदरबारी, राजकमल प्रकाशन,पृ 80
3. शुक्ल, श्रीलाल,(2019), रागदरबारी, राजकमल प्रकाशन,पृ 293
4. शुक्ल, श्रीलाल,(2019), रागदरबारी, राजकमल प्रकाशन,पृ 239
5. शुक्ल, श्रीलाल,(2019), रागदरबारी, राजकमल प्रकाशन,पृ 11
6. शुक्ल, श्रीलाल,(2019), रागदरबारी, राजकमल प्रकाशन,पृ 243
7. हरदयाल, राग दरबारी का मूल राग, मधुरेश (संपा.), रागदरबारी का महत्व,(पृ 71) लोकभारती प्रकाशन,

****